एज्रा

कुस्रू बन्दियों की वापसी में सहायता करता है

1 कुस्रू के फारस पर राज्य करने के प्रथम वर्ष* यहोवा ने कुस्रू को एक घोषणा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कुस्रू ने उस घोषणा को लिखवाया और अपने राज्य में हर एक स्थान पर पढ़वाया। यह इसलिये हुआ ताकि यहोवा का वह सन्देश जो यिर्मयाह* द्वारा कहा गया था, सच्चा हो सके। घोषणा यह है:

> 2"फारस के राजा कुस्रू का सन्देश:
>
> स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, ने पृथ्वी के सारे राज्य मुझको दिये हैं और यहोवा ने मुझे यहूदा देश के यरूशलेम में उसका एक मन्दिर बनाने के लिए चुना। 3यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर है, वह परमेश्वर जो यरूशलेम में है। यदि परमेश्वर के व्यक्तियों में कोई भी व्यक्ति तुम्हारे बीच रह रहा है तो मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उसे आशीर्वाद दे। तुम्हें उसे यहूदा देश के यरूशलेम में जाने देना चाहिये। तुम्हें यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये उन्हें जाने देना चाहिये 4और इसलिये किसी भी उस स्थान में जहाँ इस्राएल के लोग बचे हो उस स्थान के लोगों को उन बचे हुओं की सहायता करनी चाहिये। उन लोगों को चाँदी, सोना, गाय और अन्य चीज़े दो। यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये उन्हें भेंट दो।"

5अत: यहूदा और बिन्यामीन के परिवार समूहों के प्रमुखों ने यरूशलेम जाने की तैयारी की। वे यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये यरूशलेम जा रहे थे। परमेश्वर ने जिन लोगों को प्रोत्साहित किया था वे भी यरूशलेम जाने को तैयार हो गए। 6उनके सभी पड़ोसियों ने उन्हें बहुत सी भेंट दी। उन्होंने उन्हें चाँदी, सोना, पशु और अन्य कीमती चीज़ें दी। उनके पड़ोसियों ने उन्हें वे सभी चीज़ें स्वेच्छापूर्वक दीं। 7राजा कुस्रू भी उन चीजों को लाया जो यहोवा के मन्दिर की थीं। नबूकदनेस्सर उन चीज़ों को यरूशलेम से लूट लाया था। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को अपने उस मन्दिर में रखा, जिसमें वह अपने असत्य देवताओं को रखता था। 8फारस के राजा कुस्रू ने अपने उस व्यक्ति से जो उसके धन की देख रेख करता था, इन चीज़ों को बाहर लाने के लिये कहा। उस व्यक्ति का नाम मिथ्रदात था। अत: मिथ्रदात उन चीज़ों को यहूदा के प्रमुख शेशबस्सर के पास लेकर आया।

9जिन चीज़ों को मिथ्रदात यहोवा के मन्दिर से लाया था वे ये थीं:

	सोने के पात्र	30
	चाँदी के पात्र	1,000
	चाकू और कड़ाहियाँ	29
10	सोने के कटोरे	30
	सोने के कटोरों जैसे चाँदी के कटोरे,	410
	तथा एक हजार अन्य प्रकार के पात्र	1,000

11सब मिलाकर वहाँ सोने चाँदी की बनी पाँच हजार चार सौ चीज़ें थीं। शेशबस्सर इन सभी चीज़ों को अपने साथ उस समय लाया जब बन्दियों ने बाबेल छोड़ा और यरूशलेम को वापस लौट गये।

छूटकर वापस आने वाले बन्दियों की सूची

2 ये राज्य के वे व्यक्ति हैं जो बन्धुवाई से लौट कर आये। बीते समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर उन लोगों को बन्दी के रूप में बाबेल लाया था। ये लोग यरूशलेम और यहूदा को वापस आए। हर एक व्यक्ति यहूदा में अपने–अपने नगर को वापस गया। 2ये वे लोग हैं जो जरूब्बाबेल के साथ वापस आए: येशू, नहेम्याह, सरायाह, रेलायाह, मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै, रहूम, और बाना। यह इस्राएल के उन लोगों के नाम और उनकी संख्या है जो वापस लौटे:

3	परोश के वंशज	2,172
4	शपत्याह के वंशज	372
5	आरह के वंशज	775
6	येशू और योआब के परिवार के पहत्मोआब के वंशज	2,812
7	एलाम के वंशज	1,254

प्रथम वर्ष अर्थात् ई. पू. 538

यहोवा का ... यिर्मयाह देखे यिर्म. 25:12–14

8 जत्तू के वंशज 945
9 जक्कै के वंशज 760
10 बानी के वंशज 642
11 बेबै के वंशज 623
12 अजगाद के वंशज 1,222
13 अदोनीकाम के वंशज 666
14 बिगवै के वंशज 2,056
15 आदीन के वंशज 454
16 आतेर के वंशज (हिजकिय्याह के पारिवारिक पीढ़ी से) 98
17 बेसै के वंशज 323
18 योरा के वंशज 112
19 हाशूम के वंशज 223
20 गिब्बार के वंशज 95
21 बेतलेहेम नगर के लोग 123
22 नतोपा के नगर से 56
23 अनातोत नगर से 128
24 अज्मावेत के नगर से 42
25 किर्यतारीम, कपीरा और बेरोत नगरों से 743
26 रामा और गेबा नगर से 621
27 मिकमास नगर से 122
28 बेतेल और ऐ नगर से 223
29 नबो नगर से 52
30 मग्बीस नगर से 156
31 एलाम नामक अन्य नगर से 1,254
32 हारीम नगर से 320
33 लोद, हादीद और ओनो नगरों स 725
34 यरीहो नगर से 345
35 सना नगर से 3,630

36याजकों के नाम और उनकी संख्या की सूची यह है: यदायाह के वंशज (येशू की पारिवारिक पीढ़ी से) 973
37 इम्मेर के वंशज 1,052
38 पशहूर के वंशज 1,247
39 हारीम के वंशज 1,017

40लेवीवंशी कहे जाने वाले लेवी के परिवार की संख्या यह है:
येशू, और कदमिएल (होदग्याह की पारिवारिक पीढ़ी से) 74
41 गायकों की संख्या यह है:
आसाप के वंशज 128
42 मन्दिर के द्वारपालों की संख्या यह है :
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज 139

43मन्दिर के विशेष सेवक ये हैं:
ये सीहा, हसूपा, और तब्बाओत के वंशज हैं।
44 केरोस, सीअहा, पादोन,
45 लबाना, हागाब, अक्कूब
46 हागाब, शल्मै, हानान,
47 गिद्दल, गहर, रायाह,
48 रसीन, नकोदा, गज्जाम,
49 उज्जा, पासेह, बेसै,
50 अस्ना, मूनीम, नपीसीम।
51 बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
52 बसलूत, महीदा, हर्शा,
53 बर्कोस, सीसरा, तेमह,
54 नसीह और हतीपा।
55ये सुलैमान के सेवकों के वंशज हैं:
सोतै, हस्सोपेरेत और परूदा की सन्तानें।
56 याला, दर्कोन, गिद्देल,
57 शपत्याह, हत्तील, पोकरेतसबायीम।
58 मन्दिर के सेवक और सुलैमान के सेवकों के कुल वंशज 392

59कुछ लोग इन नगरों से यरूशलेम आये: तेल्मेलह,
तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर। किन्तु ये लोग यह
प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके परिवार इस्राएल के
परिवार से हैं।
60 उनके नाम और उनकी संख्या यह है: दलायाह, तोबिय्याह और नकोदा के वंशज 652

61यह याजकों के परिवारों के नाम हैं:
हबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (एक व्यक्ति जिसने गिलादी के बर्जिल्लै की पुत्री से विवाह किया था और बर्जिल्लै के पारिवारिक नाम से ही जाना जाता था।)

62इन लोगों ने अपने पारिवारिक इतिहासों की खोज
की, किन्तु उसे पा न सके। उनके नाम याजकों की
सूची में नहीं सम्मिलित किये गये थे। वे यह प्रमाणित
नहीं कर सके कि उनके पूर्वज याजक थे। इसी कारण
वे याजक नहीं हो सकते थे। 63प्रशासक ने इन लोगों
को आदेश दिया कि ये लोग कोई भी पवित्र भोजन न
करें। वे तब तक इस पवित्र भोजन से नहीं खा सकते
जब तक एक याजक जो ऊरीम और तुम्मीम का
उपयोग करके यहोवा से न पूछे कि क्या किया जाये।
64-65सब मिलाकर बयालीस हजार तीन सौ साठ लोग
उन समूहों में थे जो वापस लौट आए। इसमें उनके सात
हजार तीन सौ सैंतीस सेवक, सेविकाओं की गणना नहीं
है और उनके साथ दो सौ गायक और गायिकाएं भी
थीं। 66-67उनके पास सात सौ छत्तीस घोड़े, दो सौ पैंतालीस

खच्चर, चार सौ पैंतीस ऊँट और छ: हजार सात सौ बीस गधे थे। 68वह समूह यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को पहुँचा। तब परिवार के प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये अपनी भेंटें दीं। उन्होंने जो मन्दिर नष्ट हो गया था उसी के स्थान पर नया मन्दिर बनाना चाहा। 69उन लोगों ने उतना दिया जितना वे दे सकते थे। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें उन्होंने मन्दिर बनाने के लिये दिया: लगभग पाँच सौ किलो सोना, तीन टन चाँदी, और याजकों के पहनने वाले सौ चोगे।

70इस प्रकार याजक, लेवीवंशी और कुछ अन्य लोग यरूशलेम और उसके चारों ओर के क्षेत्र में बस गये। इस समूह में मन्दिर के गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक सम्मिलित थे। इस्राएल के अन्य लोग अपने निजी निवास स्थानों में बस गये।

वेदी का फिर से बनना

3 अत, सातवें महीने से इस्राएल के लोग अपने अपने नगरों में लौट गये। उस समय, सभी लोग यरूशलेम में एक साथ इकट्ठे हुए। वे सभी एक इकाई के रूप में संगठित थे। 2तब योसादाक के पुत्र येशू और उसके साथ याजकों तथा शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल और उसके साथ के लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर की वेदी बनाई। उन लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर के लिये वेदी इसलिए बनाई ताकि वे इस पर बलि चढ़ा सकें। उन्होंने उसे ठीक मूसा के नियमों के अनुसार बनाया। मूसा परमेश्वर का विशेष सेवक था।

3वे लोग अपने आस पास के रहने वाले अन्य लोगों से डरे हुए थे। किन्तु यह भय उन्हें रोक न सका और उन्होंने वेदी की पुरानी नींव पर ही वेदी बनाई और उस पर यहोवा को होमबलि दी। उन्होंने वे बलियाँ सवेरे और शाम को दीं। 4तब उन्होंने आश्रयों का पर्व ठीक वैसे ही मनाया जैसा मूसा के नियम में कहा गया है। उन्होंने उत्सव के प्रत्येक दिन के लिये उचित संख्या में होमबलि दी। 5उसके बाद, उन्होंने लगातार चलने वाली प्रत्येक दिन की होमबलि नया चाँद, और सभी अन्य उत्सव व विश्राम के दिनों की भेंटें चढ़ानी आरम्भ की जैसा कि यहोवा द्वारा आदेश दिया गया था। लोग अन्य उन भेंटों को भी चढ़ाने लगे जिन्हें वे यहोवा को चढ़ाना चाहते थे। 6अत: सातवें महीने के पहले दिन इस्राएल के इन लोगों ने यहोवा को फिर भेंट चढ़ाना आरम्भ किया। यह तब भी किया गया जबकि मन्दिर की नींव अभी फिर से नहीं बनी थी।

मन्दिर का पुन: निर्माण

7तब उन लोगों ने जो बन्धुवाई से छूट कर आये थे, संगतराशों और बढ़ईयों को धन दिया और उन लोगों ने उन्हें भोजन, दाखमधु और जैतून का तेल दिया। उन्होंने इन चीज़ों का उपयोग सोर और सीदोन के लोगों को लबानोन से देवदार के लट्ठों को लाने के लिये भुगतान करने में किया। वे लोग चाहते थे कि जापा नगर के समुद्री तट पर लट्ठों को जहाजों द्वारा ले आएँ। जैसा कि सुलैमान ने किया था जब उसने पहले मन्दिर को बनाया था। फारस के राजा कुस्रू ने यह करने के लिये उन्हें स्वीकृति दे दी।

8अत: यरूशलेम में मन्दिर पर उनके पहुँचने के दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और योसादाक के पुत्र येशू ने काम करना आरम्भ किया। उनके भाईयों, याजकों, लेवीवंशियों और प्रत्येक व्यक्ति जो बन्धुवाई से यरूशलेम लौटे थे, सब ने उनके साथ काम करना आरम्भ किया। उन्होंने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये उन लेवीवंशियों को प्रमुख चुना जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे। 9ये वे लोग थे जो मन्दिर के बनने की देखरेख कर रहे थे, येशू के पुत्र और उसके भाई, कदमीएल और उसके पुत्र (यहूदा के वंशज थे) हेनादाद के पुत्र और उनके बन्धु लेवीवंशी। 10कारीगरों ने यहोवा के मन्दिर की नींव डालनी पूरी कर दी। जब नींव पड़ गई तब याजकों ने अपने विशेष वस्त्र पहने। तब उन्होंने अपनी तुरही ली और आसाप के पुत्रों ने अपने झाँझों को लिया। उन्होंने यहोवा की स्तुति के लिये अपने अपने स्थान ले लिये। यह उसी तरह किया गया जिस तरह करने के लिये भूतकाल में इस्राएल के राजा दाऊद ने आदेश दिया था। 11यहोवा ने जो कुछ किया, उन्होंने, उसके लिये उसकी प्रशंसा करते हुए तथा धन्यवाद देते हुए, यह गीत गाया "वह अच्छा है, उसका इस्राएल के लिए प्रेम शाश्वत है।"* और तब सभी लोग खुश हुए। उन्होंने बहुत जोर से उद्घोष और यहोवा की स्तुति की। क्यों? क्योंकि मन्दिर की नींव पूरी हो चुकी थी।

12किन्तु बुज़ुर्ग याजकों में से बहुत से, लेवीवंशी और परिवार प्रमुख रो पड़े। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने प्रथम मन्दिर को देखा था, और वे यह याद कर रहे थे कि वह कितना सुन्दर था। वे रो पड़े जब उन्होंने नये मन्दिर को देखा। वे रो रहे थे जब बहुत से अन्य लोग प्रसन्न थे और शोर मचा रहे थे। 13उद्घोष बहुत दूर तक सुना जा सकता था। उन सभी लोगों ने इतना शोर मचाया कि कोई व्यक्ति प्रसन्नता के उद्घोष और रोने में अन्तर नहीं कर सकता था।

मन्दिर के पुन: निर्माण के विरुद्ध शत्रु

4 1-2उस क्षेत्र में रहने वाले बहुत से लोग यहूदा और बिन्यामीन के लोगों के विरूद्ध थे। उन शत्रुओं ने

वह अच्छा ... शाश्वत है संभवत: इसका अर्थ यह है कि उन्होंने उस भजन को गाया जिसे हम भजन 111–118 और भजन 136 के रूप में जानते हैं।

सुना कि वे लोग जो बन्धुवाई से आये हैं वे, इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा के लिये एक मन्दिर बना रहे हैं।
इसलिये वे शत्रु जरुब्बाबेल तथा परिवार प्रमुखों के पास
आए और उन्होंने कहा, "मन्दिर बनाने में हमें तुमको
सहायता करने दो। हम लोग वही हैं जो तुम हो, हम
तुम्हारे परमेश्वर से सहायता माँगते हैं। हम लोगों ने
तुम्हारे परमेश्वर को तब से बलि चढ़ाई है जब से
अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन हम लोगों को यहाँ लाया।"

3किन्तु जरुब्बाबेल, येशू और इस्राएल के अन्य परिवार
प्रमुखों ने उत्तर दिया, "नहीं, तुम जैसे लोग हमारे परमेश्वर
के लिये मन्दिर बनाने में हमें सहायता नहीं कर सकते।
केवल हम लोग ही यहोवा के लिए मन्दिर बना सकते
हैं। वह इस्राएल का परमेश्वर है। फारस के राजा कुस्रू
ने जो करने का आदेश दिया है, वह यही है।"

4इससे वे लोग क्रोधित हो उठे। अत: उन लोगों ने
यहूदियों को परेशान करना आरम्भ किया। उन्होंने
उनको हतोत्साह और मन्दिर को बनाने से रोकने का
प्रयत्न किया। 5उन शत्रुओं ने सरकारी अधिकारियों
को यहूदा के लोगों के विरूद्ध काम करने के लिए
खरीद लिया। उन अधिकारियों ने यहूदियों द्वारा मन्दिर
को बनाने की योजना को रोकने के लिए लगातार
काम किया। यह उस दौरान तब तक लगातार चलता
रहा जब तक कुस्रू फारस का राजा रहा और बाद में
जब तक दारा फारस का राजा नहीं हो गया।

6उन शत्रुओं ने यहूदियों को रोकने के लिये प्रयत्न
करते हुए फ़ारस के राजा को पत्र भी लिखा। उन्होंने
यह पत्र तब लिखा था जब क्षयर्ष* फारस का राजा
बना।

यरूशलेम के पुन: निर्माण के विरुद्ध शत्रु

7बाद में, जब अर्तक्षत्र* फारस का नया राजा हुआ,
इन लोगों में से कुछ ने यहूदियों के विरूद्ध शिकायत
करते हुए एक और पत्र लिखा। जिन लोगों ने वह पत्र
लिखा, वे ये थे: बिशलाम, मिथदात, ताबेल और उसके
दल के अन्य लोग। उन्होंने पत्र राजा अर्तक्षत्र को अरामी
में अरामी लिपि का उपयोग करते हुए लिखा।

8*तब शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिलशै ने
यरूशलेम के लोगों के विरूद्ध पत्र लिखा। उन्होंने राजा
अर्तक्षत्र को पत्र लिखा। उन्होंने जो लिखा वह यह था:

9शासनाधिकारी रहूम, सचिव शिमशै, तथा तर्पली,
अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली और शूशनी के एलामी
लोगों के न्यायाधीश और महत्वपूर्ण अधिकारियों
की ओर से, 10तथा वे अन्य लोग जिन्हें महान
और शक्तिशाली ओस्नप्पर ने शोमरोन के नगरों
एवं परात नदी के पश्चिमी प्रदेश के अन्य स्थानों
पर बसाया था। 11यह उस पत्र की प्रतिलिपि है
जिसे उन लोगों ने अर्तक्षत्र को भेजा था।

राजा अर्तक्षत्र को, परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में
रहने वाले आप के सेवकों की ओर से है।

12राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते
हैं कि जिन यहूदियों को आपने–अपने पास से
भेजा है, वे यहाँ आ गये हैं। वे यहूदी उस नगर को
फिर से बनाना चाहते हैं। यरूशलेम एक बुरा नगर
है। उस नगर के लोगों ने अन्य राजाओं के विरूद्ध
सदैव विद्रोह किया है। अब वे यहूदी परकोटे की
नींवों को पक्का कर रहे हैं और दीवारें खड़ी कर
रहे हैं।*

13राजा अर्तक्षत्र आपको यह भी जान लेना चाहिये
कि यदि यरूशलेम और इसके परकोटे फिर बन
गए तो यरूशलेम के लोग कर देना बन्द कर देंगे।
वे आपका सम्मान करने के लिये धन भेजना बन्द
कर देंगे। वे सेवा कर देना भी रोक देंगे और राजा
को उस सारे धन से हाथ धोना पड़ेगा।

14हम लोग राजा के प्रति उत्तरदायी हैं। हम लोग
यह सब घटित होना नहीं देखना चाहते। यही कारण
है कि हम लोग यह पत्र राजा को सूचना के लिये
भेज रहे हैं।

15राजा अर्तक्षत्र हम चाहते हैं कि आप उन राजाओं
के लेखों का पता लगायें जिन्होंने आपके पहले
शासन किये। आप उन लेखों में देखेंगे कि यरूशलेम
ने सदैव अन्य राजाओं के प्रति विद्रोह किया। इसने
अन्य राजाओं और राष्ट्रों के लिये बहुत कठिनाईयाँ
उत्पन्न की है। प्राचीन काल से इस नगर में बहुत
से विद्रोह का आरम्भ हुआ है! यही कारण है कि
यरूशलेम नष्ट हुआ था!

16राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते
हैं कि यदि यह नगर और इसके परकोटे फिर से
बन गई तो फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र आप
के हाथ से निकल जाएँगे।

17तब अर्तक्षत्र ने यह उत्तर भेजा: शासनाधिकारी
रहूम और सचिव शिमशै और उन के सभी साथियों
को जो शोमरोन और परात नदी के अन्य पश्चिमी
प्रदेश में रहते हैं, को अपना उत्तर भेजा।

अभिवादन,

18तुम लोगों ने जो हमारे पास पत्र भेजा उसका
अनुवाद हुआ और मुझे सुनाया गया। 19मैंने आदेश

क्षयर्ष फ़ारस का राजा, लगभग ई. पू. 485–465

अर्तक्षत्र फ़ारस का राजा लगभग ई. पू. 465– 424यह क्षयर्ष का पुत्र था।

पद्य 4:8 यहाँ मूल भाषा हिब्रू से अरामी भाषा हो गई है।

अब ... रहे हैं यह नगर को सुरक्षित रखने का तरीका था, किन्तु ये लोग राजा को यह विचार करने वाला बनाना चाहते थे कि यहूदी उसके विरूद्ध विद्रोह करने की तैयारी कर रहे हैं।

दिया कि मेरे पहले के राजाओं के लेखों की खोज
की जाये। लेख पढ़े गये और हम लोगों को ज्ञात
हुआ कि यरूशलेम द्वारा राजाओं के विरूद्ध विद्रोह
करने का एक लम्बा इतिहास है। यरूशलेम ऐसा
स्थान रहा है जहाँ प्राय: विद्रोह और क्रान्तियाँ होती
रही हैं। **20**यरूशलेम और फरात नदी के पश्चिम
के पूरे क्षेत्र पर शक्तिशाली राजा राज्य करते रहे
हैं। राज्य कर और राजा के सम्मान के लिये धन
और विविध प्रकार के कर उन राजाओं को दिये
गए हैं।
21अब तुम्हें उन लोगों को काम बन्द करने के
लिये एक आदेश देना चाहिए। यह आदेश यरूशलेम
के पुन: निर्माण को रोकने के लिये तब तक है,
जब तक कि मैं वैसा करने की आज्ञा न दूँ। **22**इस
आज्ञा की उपेक्षा न हो, इसके लिये सावधान रहना।
हमें यरूशलेम के निर्माण कार्य को जारी नहीं
रहने देना चाहिए। यदि काम चलता रहा तो मुझे
यरूशलेम से आगे कुछ भी धन नहीं मिलेगा।

23सो उस पत्र की प्रतिलिपि, जिसे राजा अर्तक्षत्र ने
भेजा रहूम, सचिव शिमशै और उनके साथ के लोगों
को पढ़कर सुनाई गई। तब वे लोग बड़ी तेज़ी से यरूशलेम
में यहूदियों के पास गए। उन्होंने यहूदियों को निर्माण
कार्य बन्द करने को विवश कर दिया।

मन्दिर का कार्य रुका

24इस प्रकार यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर का
काम रुक गया। फारस के राजा दारा के शासनकाल
के दूसरे वर्ष तक यह कार्य नहीं चला।
5 तब हाग्गै* नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह* ने
इस्राएल के परमेश्वर के नाम पर भविष्यवाणी
करनी आरम्भ की। उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में
यहूदियों को प्रोत्साहित किया। **2**अत: शालतीएल का पुत्र
जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशू ने फिर यरूशलेम
में मन्दिर का निर्माण करना आरम्भ कर दिया। सभी
परमेश्वर के नबी उनके साथ थे और कार्य में सहायता
कर रहे थे। **3**उस समय फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र
का राज्यपाल तत्तनै था। तत्तनै, शतर्बोजनै और उनके
साथ के लोग जरुब्बाबेल और येशू तथा निर्माण करने
वालों के पास गए। तत्तनै और उसके साथ के लोगों ने
जरूब्बाबेल और उसके साथ के लोगों से पूछा, "तुम्हें
इस मन्दिर को फिर से बनाने और इस की छत का
काम पूरा करने का आदेश किसने दिया?" **4**उन्होंने
जरुब्बाबेल से यह भी पूछा, "जो लोग इस इमारत को
बनाने का काम कर रहे है उनके नाम क्या हैं?"

5किन्तु परमेश्वर यहूदी प्रमुखों पर दृष्टि रख रहा
था। निर्माण करने वालों को तब तक काम नहीं रोकना
पड़ा जब तक उसका विवरण राजा दारा को न भेज
दिया गया। वे तब तक काम करते रहे जब तक राजा
दारा ने अपना उत्तर वापस नहीं भेजा।
6फ़रात के पश्चिम के क्षेत्रों के शासनाधिकारी तत्तनै,
शतर्बोजनै और उनके साथ के महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने
राजा दारा के पास पत्र भेजा। **7**यह उस पत्र की प्रतिलिपि
है:

राजा दारा को अभिवादन
8राजा दारा, आपको ज्ञात होना चाहिए कि हम
लोग यहूदा प्रदेश में गए। हम लोग महान परमेश्वर
के मन्दिर को गए। यहूदा के लोग उस मन्दिर को
बड़े पत्थरों से बना रहे हैं। वे दीवारों में लकड़ी की
बड़ी–बड़ी शहतीरें डाल रहे हैं। काम बड़ी सावधानी
से किया जा रहा है, और यहूदा के लोग बहुत
परिश्रम कर रहे हैं। वे बड़ी तेज़ी से निर्माण कार्य
कर रहे हैं और यह शीघ्र ही पूरा हो जाएगा।
9हम लोगों ने उनके प्रमुखों से कुछ प्रश्न उनके
निर्माण कार्य के बारे में पूछा हम लोगों ने उनसे
पूछा, "तुम्हें इस मन्दिर को फिर से बनाने और
इस की छत का काम पूरा करने की स्वीकृति
किसने दी है?" **10**हम लोगों ने उनके नाम भी
पूछे। हम लोगों ने उन लोगों के प्रमुखों के नाम
लिखना चाहा जिससे आप जान सकें कि वे कौन
लोग हैं। **11**उन्होंने हमें यह उत्तर दिया:
"हम लोग स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के
सेवक हैं। हम लोग उसी मन्दिर को बना रहे हैं
जिसे बहुत वर्ष पहले इस्राएल के एक महान राजा
ने बनाया और पूरा किया था। **12**किन्तु हमारे
पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोधित किया।
इसलिये परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को बाबेल के
राजा नबूकदनेस्सर को दिया। नबूकदनेस्सर ने
इस मन्दिर को नष्ट किया और उसने लोगों को
बन्दी के रूप में बाबेल जाने को विवश किया।
13किन्तु बाबेल पर कुस्रू के राजा होने के प्रथम
वर्ष में राजा कुस्रू ने परमेश्वर के मन्दिर को फिर
से बनाने के लिए विशेष आदेश दिया। **14**कुस्रू ने
बाबेल में अपने असत्य देवता के मन्दिर से उन
सोने चाँदी की चीजों को निकाला जो भूतकाल में
परमेश्वर के मन्दिर से लूट कर ले जाई गई थीं।
नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर
से लूटा और उन्हें बाबेल में अपने असत्य देवताओं
के मन्दिर में ले आया। तब राजा कुस्रू ने उन सोने
चाँदी की चीजों को शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) को दे
दिया। कुस्रू ने शेशबस्सर को प्रशासक चुना था।

हाग्गै देखें हाग्गै 1:1

इद्दो ... जकर्याह देखें जकर्याह 1:1

15कुस्रू ने तब शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) से कहा था, "इन सोने चाँदी की चीज़ों को लो और उन्हें यरूशलेम के मन्दिर में वापस रखो। उसी स्थान पर परमेश्वर के मन्दिर को बनाओ जहाँ वह पहले था।" 16अत: शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) आया और उसने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर की नींव का काम पूरा किया। उस दिन से आज तक मन्दिर के निर्माण का काम चलता आ रहा है। किन्तु यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है।"

17अब यदि राजा चाहते हैं तो कृपया वे राजाओं के लेखों को खोजें। यह देखने के लिए खोज करें कि क्या राजा कुस्रू द्वारा यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर को फिर से बनाने का दिया गया आदेश सत्य है और तब, महामहिम, कृपया आप हम लोगों को पत्र भेजें जिससे हम जान सकें कि आपने इस विषय में क्या करने का निर्णय लिया है।

दारा का आदेश

6 अत: राजा दारा ने अपने पूर्व के राजाओं के लेखों की जाँच करने का आदेश दिया। वे लेख बाबेल में वहीं रखे थे जहाँ खज़ाना रखा गया था। 2अहमत्ता के किले में एक दण्ड में लिपटा गोल पत्रक मिला। एकवतन मादे प्रान्त में है। उस दण्ड में लिपटे गोल पत्रक पर जो लिखा था, वह यह है:

सरकारी टिप्पणी: 3कुस्रू के राजा होने के प्रथम वर्ष में कुस्रू ने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये एक आदेश दिया। आदेश यह था:

परमेश्वर का मन्दिर फिर से बनने दो। यह बलि भेंट करने का स्थान होगा। इसकी नींव को बनने दो। मन्दिर साठ हाथ ऊँचा और साठ हाथ चौड़ा होना चाहिए। 4इसके परकोटे में विशाल पत्थरों की तीन कतारें और विशाल लकड़ी के शहतीरों की एक कतार होनी चाहिए। मन्दिर को बनाने का व्यय राजा के खज़ाने से किया जाना चाहिये। 5साथ ही साथ, परमेश्वर के मन्दिर की सोने और चाँदी की चीज़ें उनके स्थान पर वापस रखी जानी चाहिए। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर से लिया था और उन्हें बाबेल लाया था। वे परमेश्वर के मन्दिर में वापस रख दिये जाने चाहियें।

6इसलिये अब, मैं दारा, फरात नदी के पश्चिम के प्रदेशों के शासनाधिकारी तत्तनै और शतर्बोजनै और उस प्रान्त के रहने वाले सभी अधिकारियों, तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम लोग यरूशलेम से दूर रहो। 7श्रमिकों को परेशान न करो। परमेश्वर के उस मन्दिर के काम को बन्द करने का प्रयत्न मत करो। यहूदी प्रशासक और यहूदी प्रमुखों को इन्हें फिर से बनाने दो। उन्हें परमेश्वर के मन्दिर को उसी स्थान पर फिर से बनाने दो जहाँ यह पहले था।

8अब मैं यह आदेश देता हूँ, तुम्हें परमेश्वर के मन्दिर को बनाने वाले यहूदी प्रमुखों के लिये यह करना चाहिये: इमारत की लागत का भुगतान राजा के खज़ाने से होना चाहिये। यह धन फ़रात नदी के पश्चिम के क्षेत्र के प्रान्तों से इकट्ठा किये गये राज्य कर से आयेगा। ये काम शीघ्रता से करो, जिससे काम रूके नहीं। 9उन लोगों को वह सब दो जिसकी उन्हें आवश्यकता हो। यदि उन्हें स्वर्ग के परमेश्वर को बलि के लिये युवा बैलों, मेढ़ों या मेमनों की जरूरत पड़े तो उन्हें वह सब कुछ दो। यदि यरूशलेम के याजक गेहूँ, नमक, दाखमधु और तेल माँगे तो बिना भूल चूक के प्रतिदिन ये चीज़ें उन्हें दो। 10उन चीज़ों को यहूदी याजकों को दो जिससे वे ऐसी बलि भेंट करें कि जिससे स्वर्ग का परमेश्वर प्रसन्न हो। उन चीज़ों को दो जिससे याजक मेरे और मेरे पुत्रों के लिये प्रार्थना करें।11मैं यह आदेश भी देता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति इस आदेश को बदलता है तो उस व्यक्ति के मकान से एक लकड़ी की कड़ी निकाल लेनी चाहिए और उस लकड़ी की कड़ी को उस व्यक्ति की शरीर पर धँसा देना चाहिये और उसके घर को तब तक नष्ट किया जाना चाहिये जब तक कि वह पत्थरों का ढेर न बन जाये।

12परमेश्वर यरूशलेम पर अपना नाम अंकित करे और मुझे आशा है कि परमेश्वर किसी भी उस राजा या व्यक्ति को पराजित करेगा जो इस आदेश को बदलने का प्रयत्न करता है। यदि कोई यरूशलेम में इस मन्दिर को नष्ट करना चाहता है तो मुझे आशा है कि परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा। मैं (दारा) ने, यह आदेश दिया है। इस आदेश का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से होना चाहिए!

मन्दिर का पूर्ण और समर्पित होना

13अत: फ़रात नदी के पश्चिम क्षेत्र के प्रशासक तत्तनै, शतर्बोजनै और उसके साथ के लोगों ने राजा दारा के आदेश का पालन किया। उन लोगों ने आज्ञा का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से किया। 14अत: यहूदी अग्रजों (प्रमुखों) ने निर्माण कार्य जारी रखा और वे सफल हुए क्योंकि हाग्गै नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह ने उन्हें प्रोत्साहित किया। उन लोगों ने मन्दिर का निर्माण कार्य पूरा कर लिया। यह इस्राएल के परमेश्वर के आदेश का पालन करने के लिये किया गया। यह फारस के राजाओं, कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र ने जो आदेश दिये थे उनका पालन करने के लिये किया गया। 15मन्दिर का निर्माण अदर महीने के तीसरे दिन

पूरा हुआ।* यह राजा दारा के शासन के छठें वर्ष में हुआ।*

16तब इस्राएल के लोगों ने अत्यन्त उल्लास के साथ परमेश्वर के मन्दिर का समर्पण उत्सव मनाया। याजक, लेवीवंशी, और बन्धुवाई से वापस आए अन्य सभी लोग इस उत्सव में सम्मिलित हुये।

17उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को इस प्रकार समर्पित किया: उन्होंने एक सौ बैल, दो सौ मेढ़े और चार सौ मेमने भेंट किये और उन्होंने पूरे इस्राएल के लिये पाप भेंट के रूप में बारह बकरे भेंट किये अर्थात् इस्राएल के बारह परिवार समूह में से हर एक के लिए एक बकरा भेंट किया। 18तब उन्होंने यरूशलेम में मन्दिर में सेवा करने के लिये याजकों और लेवीवंशियों के समूह बनाये। यह सब उन्होंने उसी प्रकार किया जिस प्रकार मूसा की पुस्तक में बताया गया है।

फसह पर्व

19*पहले महीने के चौदहवें दिन उन यहूदियों ने फसह पर्व मनाया जो बन्धुवाई से वापस लौटेथे। 20याजकों और लेवीवंशियों ने अपने को शुद्ध किया। उन सभी ने फसह पर्व मनाने के लिये अपने को स्वच्छ और तैयार किया। लेवीवंशियों ने बन्धुवाई से लौटने वाले सभी यहूदियों के लिये फसह पर्व के मेमने को मारा। उन्होंने यह अपने लिये और अपने याजक बंधुओं के लिये किया। 21इसलिये बन्धुवाई से लौटे इस्राएल के सभी लोगों ने फसह पर्व का भोजन किया। अन्य लोगों ने स्नान किया और अपने आपको को उन अशुद्ध चीज़ों से अलग हट कर शुद्ध किया जो उस प्रदेश में रहने वाले लोगों की थीं। उन शुद्ध लोगों ने भी फसह पर्व के भोजन में हिस्सा लिया। उन लोगों ने यह इसलिये किया, कि वे यहोवा इस्राएल के परमेश्वर के पास सहायता के लिये जा सकें। 22उन्होंने अखमीरी रोटी का उत्सव सात दिन तक बहुत अधिक प्रसन्नता से मनाया। यहोवा ने उन्हें बहुत प्रसन्न किया क्योंकि उसने अश्शूर के राजा के व्यवहार को बदल दिया था। अत: अश्शूर के राजा ने परमेश्वर के मन्दिर को बनाने में उनकी सहायता की थी।

एज्रा यरूशलेम आता है

7 फारस के राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में इन सब बातों के हो जाने के बाद* एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा सरायाह का पुत्र था। सरायाह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह हिल्किय्याह का पुत्र था। 2हिल्किय्याह शल्लूम का पुत्र था। शल्लूम सादोक का पुत्र था। सादोक अहीतूब का पुत्र था। 3अहीतूब अमर्याह का पुत्र था। अमर्याह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह मरायोत का पुत्र था। 4मरायोत जरह्याह का पुत्र था। जरह्याह उज्जी का पुत्र था। उज्जी बुक्की का पुत्र था। 5बुक्की अबीशू का पुत्र था। अबीशू पीनहास का पुत्र था। पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। एलीआज़र महायाजक हारून का पुत्र था।

6एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा एक शिक्षक था। वह मूसा के नियमों को अच्छी तरह जानता था। मूसा का नियम यहोवा इस्राएल के परमेश्वर द्वारा दिया गया था। राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा को वह हर चीज़ दी जिसे उसने माँगा क्योंकि यहोवा परमेश्वर एज्रा के साथ था। 7इस्राएल के बहुत से लोग एज्रा के साथ आए। वे याजक लेवीवंशी, गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक थे। इस्राएल के वे लोग अर्तक्षत्र के शासनकाल के सातवें वर्ष यरूशलेम आए। 8एज्रा यरूशलेम में राजा अर्तक्षत्र के राज्यकाल के सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में आया। 9एज्रा और उसके समूह ने बाबेल को पहले महीने के पहले दिन छोड़ा। वह पाँचवें महीने के पहले दिन यरूशलेम पहुँचा। यहोवा परमेश्वर एज्रा के साथ था। 10एज्रा ने अपना पूरा समय और ध्यान यहोवा के नियमों को पढ़ने और उनके पालन करने में दिया। एज्रा इस्राएल के लोगों को यहोवा के नियमों और आदेशों की शिक्षा देना चाहता था और वह इस्राएल में लोगों को उन नियमों का अनुसरण करने में सहायता देना चाहता था।

राजा अर्तक्षत्र का एज्रा को पत्र

11एज्रा एक याजक और शिक्षक था। इस्राएल को यहोवा द्वारा दिये गए आदेशों और नियमों के बारे में वह पर्याप्त ज्ञान रखता था। यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जिसे राजा अर्तक्षत्र ने उपदेशक एज्रा को दिया था।

12*राजा अर्तक्षत्र की ओर से,
याजक एज्रा को जो स्वर्ग के परमेश्वर के नियमों का शिक्षक है:
अभिवादन! 13मैं यह आदेश देता हूँ: कोई व्यक्ति, याजक या इस्राएल का लेवीवंशी जो मेरे राज्य में रहता है और एज्रा के साथ यरूशलेम जाना चाहता है, जा सकता है।
14एज्रा, मैं और मेरे सात सलाहकार तुम्हें भेजते हैं। तुम्हें यहूदा और यरूशलेम को जाना चाहिये।

मन्दिर ... पूरा हुआ यह दिन मार्च के महिने में था। कुछ प्राचीन लेखक इसे “अदर का 23वां दिन” कहते हैं।

यह ... हुआ अर्थात् ई.पू. 515

19 पद्य यहाँ मूल पद्य अरामिक भाषा में है यहाँ से आगे अब फिर हिब्रू भाषा हो गई है।

इन सब ... बाद एज्रा के अध्याय 6और अध्याय 7के बीच 58वर्ष के समय का अन्तर है। एस्तेर की पुस्तक की घटनाएँ इन दोनों अध्यायों के समय के बीच की हैं।

पद्य 12 से इस पुस्तक का मूल पाठ हिब्रू से अरामी भाषा में हो गया है।

यह देखो कि तुम्हारे लोग तुम्हारे परमेश्वर के नियमों का पालन कैसे कर रहे हैं। तुम्हारे पास वह नियम है।

15मैं और मेरे सलाहकार इस्राएल के परमेश्वर को सोना–चाँदी दे रहे हैं। परमेश्वर का निवास यरूशलेम में है। तुम्हें यह सोना चाँदी अपने साथ
ले जाना चाहिये। 16तुम्हें बाबेल के सभी प्रान्तों से होकर जाना चाहिये। अपने लोगों, याजकों और लेवीवंशियों से भी भेंटें इकट्ठी करो। ये भेंटें उनके यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये है।

17इस धन का उपयोग बैल, मेढ़े और नर मेमने खरीदने में करो। उन बलियों के साथ जो अन्न भेंट और पेय भेंट चढ़ाई जानी है, उन्हें खरीदो। तब उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के मन्दिर
की वेदी पर बलि चढ़ाओ। 18उसके बाद तुम और अन्य यहूदी बचे हुये सोने चाँदी को जैसे भी चाहो, खर्च कर सकते हो। इसका उपयोग वैसे ही करो जो तुम्हारे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला हो।
19उन सभी चीज़ों को यरूशलेम के परमेश्वर के पास ले जाओ। वे चीज़ें तुम्हारे परमेश्वर के मन्दिर
में उपासना के लिये हैं। 20तुम कोई भी अन्य चीज़ें ले सकते हो जिन्हें तुम अपने परमेश्वर के मन्दिर के लिये आवश्यक समझते हो। राजा के खज़ाने के धन का उपयोग जो कुछ तुम चाहते हो उसके खरीदने के लिये कर सकते हो।

21अब मैं, राजा अर्तक्षत्र यह आदेश देता हूँ: मैं उन सभी लोगों को जो फरात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में राजा के कोषपाल हैं, आदेश देता हूँ कि वे एज्रा को जो कुछ भी वह माँगे दें। एज्रा स्वर्ग के परमेश्वर के नियमों का शिक्षक और याजक है। इस आदेश का शीघ्र और पूर्ण रूप से पालन करो।
22एज्रा को इतना तक दे दो : पौने चार टन चाँदी, छ: सौ बुशल गेहूँ, छ: सौ गैलन दाखमधु, छ: सौ गैलन जैतून का तेल और उतना नमक जितना
एज्रा चाहे। 23स्वर्ग का परमेश्वर, एज्रा को जिस चीज़ को पाने के लिये आदेश दे उसे तुम्हें शीघ्र और पूर्ण रूप से एज्रा को देना चाहिये। स्वर्ग के परमेश्वर के मन्दिर के लिये ये सब चीज़ें करो। हम नहीं चाहते कि परमेश्वर मेरे राज्य या मेरे पुत्रों पर क्रोधित हो।

24मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को ज्ञात हो कि याजकों, लेवियों, गायकों, द्वारपालों और परमेश्वर के मन्दिर के अन्य कर्मचारियों तथा सेवकों को किसी भी प्रकार का कर देने के लिये बाध्य करना, नियम के विरोध है। 25एज्रा मैं तुम्हें तुम्हारे
परमेश्वर द्वारा प्राप्त बुद्धि के उपयोग तथा सरकारी और धार्मिक न्यायाधीशों को चुनने का अधिकार देता हूँ। ये लोग फरात नदी के पश्चिम में रहने वाले सभी लोगों के लिये न्यायाधीश होंगे। वे उन सभी लोगों का न्याय करेंगे जो तुम्हारे परमेश्वर के नियमों को जानते हैं। यदि कोई व्यक्ति उन नियमों को नहीं जानता तो वे न्यायाधीश उसे उन नियमों को बताएंगे। 26यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो
तुम्हारे परमेश्वर के नियमों या राजा के नियमों का पालन नहीं करता हो, तो उसे अवश्य दण्डित किया जाना चाहिये। अपराध के अनुसार उसे मृत्यु दण्ड, देश निकाला, उसकी सम्पत्ति को जब्त करना या बन्दीगृह में डालने का दण्ड दिया जाना चाहिए।

एज्रा परमेश्वर की स्तुति करता है

27 *हमारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो। उस ने राजा के मन में ये विचार डाला कि वह यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर का सम्मान करे।

28यहोवा ने राजा, उसके सलाहकारों और बड़े अधिकारियों के सामने मुझ पर अपना सच्चा प्रेम प्रकट किया। यहोवा मेरा परमेश्वर मेरे साथ था, अत: मैं साहसी रहा और मैंने इस्राएल के प्रमुखों को अपने साथ यरूशलेम जाने के लिये इकट्ठा किया।

एज्रा के साथ लौटने वाले परिवार प्रमुखों की सूची

8 यह बाबेल से यरूशलेम लौटने वाले परिवार प्रमुखों और अन्य लोगों की सूची है जो मेरे (एज्रा) के साथ लौटे। हम लोग राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में
यरूशलेम लौटे। यह नामों की सूची है: 2पीनहास के
वंशजों में से गेर्शोम था; ईतामार के वंशजों में से दानिय्येल
था; दाऊद के वंशजों में से हत्तूस था; 3शकन्याह के
वंशजों में से परोश, जकर्याह के वंशज तथा डेढ़ सौ
अन्य लोग; 4पहत्मोआब के वंशजों में से जरह्याह का
पुत्र एल्यहोएनै और अन्य दो सौ लोग; 5जत्तु के वंशजों
में से यहजीएल का पुत्र शकन्याह और तीन सौ अन्य
लोग; 6आदीन के वंशजों में से योनातान का पुत्र एबेद,
और पचास अन्य लोग; 7एलाम के वंशजों में से अतल्याह
का पुत्र यशायाह और सत्तर अन्य लोग; 8शपत्याह के
वंशजों में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह और अस्सी
अन्य लोग; 9योआब के वंशजों में से यहीएल का पुत्र
ओबद्याह और दो सौ अट्ठारह अन्य व्यक्ति; 10शलोमति
के वंशजों में से योसिप्याह का पुत्र शलोमति और एक
सौ साठ अन्य लोग; 11बेबै के वंशजों में से बेबै का पुत्र
जकर्याह और अट्ठाईस अन्य व्यक्ति; 12अजगाद के
वंशजों में से हक्कातान का पुत्र योहानान, और एक सौ

पद 27 इस पुस्तक का मूल पाठ अरामी भाषा से हिब्रू भाषा में हो गया है।

दस अन्य लोग; **13**अदोनीकाम के अंतिम वंशजों में से एलीपेलेत, यीएल, समायाह और साठ अन्य व्यक्ति थे; **14**बिगवै के वंशजों में से ऊत्तै, जब्बूद और सत्तर अन्य लोग।

यरूशलेम को वापसी

15मैंने (एज्रा) उन सभी लोगों को अहवा की ओर बहने वाली नदी के पास एक साथ इकट्ठा होने को बुलाया। हम लोगों ने वहाँ तीन दिन तक डेरा डाला। मुझे यह पता लगा कि उस समूह में याजक थे, किन्तु कोई लेवीवंशी नहीं था। **16**सो मैंने इन प्रमुखों को बुलाया: एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब, एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम और मैंने योयारीब और एलनातान (ये लोग शिक्षक थे) को बुलाया। **17**मैंने उन व्यक्तियों को इद्दो के पास भेजा। इद्दो कासिप्या नगर का प्रमुख है। मैंने उन व्यक्ति को बताया कि वे इद्दो और उसके सम्बन्धियों से क्या कहें। उसके सम्बन्धी कासिप्या में मन्दिर के सेवक हैं। मैंने उन लोगों को इद्दो के पास भेजा जिससे इद्दो परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के लिये हमारे पास सेवकों को भेजे। **18**क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ था, इद्दो के सम्बन्धियों ने इन लोगों को हमारे पास भेजा: महली के वंशजों में से शेरेब्याह नामक बुद्धिमान व्यक्ति। महली लेवी के पुत्रों में से एक था। लेवी इस्राएल के पुत्रों में से एक था। उन्होंने हमारे पास शेरेब्याह के पुत्रों और बन्धुओं को भेजा। ये सब मिलाकर उस परिवार से ये अट्ठारह व्यक्ति थे।

19उन्होंने मरारी के वंशजों में से हशब्याह और यशायाह को भी उनके बन्धुओं और उनके पुत्रों के साथ भेजा। उस परिवार से कुल मिलाकर बीस व्यक्ति थे। **20**उन्होंने मन्दिर के दो सौ बीस सेवक भी भेजे। उनके पूर्वज वे लोग थे जिन्हें दाऊद और बड़े अधिकारियों ने लेवीवंशियों की सहायता के लिये चुना था। उन सबके नाम सूची में लिखे हुए थे।

21वहाँ अहवा नदी के पास, मैंने (एज्रा) घोषणा की कि हमें उपवास रखना चाहिये। हमें अपने को परमेश्वर के सामने विनम्र बनाने के लिये उपवास रखना चाहिये। हम लोग परमेश्वर से अपने लिए, अपने बच्चों के लिये, और जो चीज़ें हमारी थीं, उनके साथ सुरक्षित यात्रा के लिये प्रार्थना करना चाहते थे। **22**राजा अर्तक्षत्र से, अपनी यात्रा के समय अपनी सुरक्षा के लिये सैनिक और घुड़सवारों को माँगने में मैं लज्जित था। सड़क पर शत्रु थे। मेरी लज्जा का कारण यह था कि हमने राजा से कह रखा था कि, "हमारा परमेश्वर उस हर व्यक्ति के साथ है जो उस पर विश्वास करता है और परमेश्वर उस हर एक व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो उससे मुँह फेर लेता है।"

23इसलिये हम लोगों ने अपनी यात्रा के बारे में उपवास रखा और परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने हम लोगों की प्रार्थना सुनी।

24तब मैंने याजकों में से बारह को नियुक्त किया जो प्रमुख थे। मैंने शेरेब्याह, हशब्याह और उनके दस भाईयों को चुना। **25**मैंने चाँदी, सोना और अन्य चीज़ों को तौला जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिये दी गई थीं। मैंने इन चीज़ों को उन बारह याजकों को दिया जिन्हें मैंने नियुक्त किया था। राजा अर्तक्षत्र, उसके सलाहकार, उसके बड़े अधिकारियों और बाबेल में रहने वाले सभी इस्राएलियों ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये उन चीजों को दिया। **26**मैंने इन सभी चीज़ों को तौला। वहाँ चाँदी पच्चीस टन थी। वहाँ चाँदी के पात्र व अन्य वस्तुएं थी। जिन का भार पौने चार किलोग्राम था। वहाँ सोना पौने चार टन था। **27**और मैंने उन्हें बीस सोने के कटोरे दिये। कटोरों का वज़न लगभग उन्नीस पौंड था और मैंने उन्हें झलकाये गये सुन्दर काँसे के दो पात्र दिए जो सोने के बराबर ही कीमती थे। **28**तब मैंने उन बारह याजकों से कहा: "तुम और ये चीज़ें यहोवा के लिये पवित्र हैं। लोगों ने यह चाँदी और सोना यहोवा तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर को दिया। **29**इसलिये इनकी रक्षा सावधानी से करो। तुम इसके लिए तब तक उत्तरदायी हो जब तक तुम इसे यरूशलेम में मन्दिर के प्रमुखों को नहीं दे देते। तुम इन्हें प्रमुख लेवीवंशियों को और इस्राएल के परिवार प्रमुखों को दोगे। वे उन चीजों को तौलेंगे और यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर के कोठरियों में रखेंगे।"

30सो उन याजकों और लेवियों ने उस चाँदी, सोने और उन विशेष वस्तुओं को ग्रहण किया जिन्हें एज्रा ने तौला था और उन्हें यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में ये वस्तुएं ले जाने के लिये कहा गया था।

31पहले महीने के बारहवें दिन हम लोगों ने अहवा नदी को छोड़ा और हम यरूशलेम की ओर चल पड़े। परमेश्वर हम लोगों के साथ था और उसने हमारी रक्षा शत्रुओं और डाकुओं से पूरे मार्ग भर की। **32**तब हम यरूशलेम आ पहुँचे। हमने वहाँ तीन दिन आराम किया। **33**चौथे दिन हम परमेश्वर के मन्दिर को गए और चाँदी, सोना और विशेष चीज़ों को तौला। हमने याजक ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत को वे चीज़ें दीं। पीनहास का पुत्र एलीआजर मरेमोत के साथ था और लेवीवंशी येशू का पुत्र योजाबाद और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह भी उनके साथ थे। **34**हमने हर एक चीज़ गिनी और उन्हें तौला। तब हमने उस समय कुल वज़न लिखा।

35तब उन यहूदी लोगों ने जो बन्धुवाई से आये थे, इस्राएल के परमेश्वर को होमबलि दी। उन्होंने बारह बैल पूरे इस्राएल के लिए छियानबे मेढ़े, सतहत्तर मेमने और बारह बकरे पाप भेंट के लिये चढ़ाये। यह सब

यहोवा के लिये होमबलि थी। 36तब उन लोगों ने राजा
अर्तक्षत्र का पत्र, राजकीय अधिपतियों और फरात के
पश्चिम के क्षेत्र के प्रशासकों को दिया। तब उन्होंने
इस्राएल के लोगों और मन्दिर को अपना समर्थन दिया।

विदेशी लोगों से विवाह के विषय में एज्रा की प्रार्थना

9 जब हम लोग यह सब कर चुके तब इस्राएल के
प्रमुख मेरे पास आए। उन्होंने कहा, “एज्रा इस्राएल
के लोगों और याजकों तथा लेवीवंशियों ने अपने चारों
ओर रहने वाले लोगों से अपने को अलग नहीं रखा है।
इस्राएल के लोग कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों,
अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्र के लोगों और एमोरियों
द्वारा की जाने वाली बहुत सी बुरी बातों से प्रभावित हुए
हैं 2इस्राएल के लोगों ने अपने चारों ओर रहने वाले
अन्य जाति के लोगों से विवाह किया है। इस्राएल के
लोग विशेष माने जाते हैं। किन्तु अब वे अपने चारों
ओर रहने वाले अन्य लोगों से मिलकर दोगले हो गये
हैं। इस्राएल के लोगों के प्रमुखों और बड़े अधिकारियों
ने इस विषय में बुरे उदाहरण रखे हैं।” 3जब मैंने इस
विषय में सुना, मैंने अपना लबादा और अंगरखा यह
दिखाने के लिये फाड़ डाला कि मैं बहुत परेशान हूँ। मैंने
अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोंच डाले। मैं दु:खी और
अस्त व्यस्त बैठ गया। 4तब हर एक व्यक्ति जो इस्राएल
के परमेश्वर के नियमों का आदर करता था, भय से
काँप उठा। वे डर गए क्योंकि जो इस्राएल के लोग
बन्धुवाई से लौटे, वे परमेश्वर के भक्त नहीं थे। मुझे
धक्का लगा और मैं घबरा गया। मैं वहाँ सन्ध्या की
बलि भेंट के समय तक बैठा रहा और वे लोग मेरे चारों
ओर इकट्ठे रहे।

5तब, जब सन्ध्या की बलि भेंट का समय हुआ, मैं
उठा। मैं बहुत लज्जित था। मेरा लबादा और अंगरखा
दोनों फटे थे और मैंने घुटनों के बल बैठकर यहोवा
अपने परमेश्वर की ओर हाथ फैलाये। 6तब मैंने यह
प्रार्थना की: हे मेरे परमेश्वर, मैं इतना लज्जित और
संकोच में हूँ कि तेरी ओर मेरी आँखे नहीं उठतीं, हे
मेरे परमेश्वर! मैं लाज्जित हूँ क्योंकि हमारे पाप हमारे
सिर से ऊपर चले गये हैं। हमारे अपराधों की ढेरी
इतनी ऊँची हो गई है कि वह आकाश तक पहुँच चुकी
है। 7हमारे पूर्वजों के समय से अब तक हम लोगों ने
बहुत अधिक पाप किये हैं। हम लोगों ने पाप किये,
इसलिये हम, हमारे राजा और हमारे याजक दण्डित
हुए। हम लोग विदेशी राजाओं द्वारा तलवार से और
बन्दीखाने में ठूंसे जाने तक दण्डित हुए हैं। वे राजा
हमारा धन ले गए और हमें लज्जित किया। यह स्थिति
आज भी वैसी ही है।

8किन्तु अन्त में अब तू हम पर कृपालु हुआ है। तूने
हम लोगों में से कुछ को बन्धुवाई से निकल आने दिया
है और इस पवित्र स्थान में बसने दिया है। यहोवा, तूने
हमें नया जीवन दिया है और हमारी दासता से मुक्त
किया है। 9हाँ, हम दास थे, किन्तु तू हमें सदैव के लिए
दास नहीं रहने देना चाहता था। तू हम पर कृपालु था।
तूने फारस के राजाओं को हम पर कृपालु बनाया। तेरा
मन्दिर ध्वस्त हो गया था। किन्तु तूने हमें नया जीवन
दिया जिससे हम तेरे मन्दिर को फिर बना सकते हैं
और नये की तरह पक्का कर सकते हैं। परमेश्वर,
तूने हमें यरूशलेम और यहूदा की रक्षा के लिये परकोटे
बनाने में सहायता की।

10हमारे परमेश्वर, अब हम तुझसे क्या कह सकतेहैं?
हम लोगों ने तेरी आज्ञा का पालन करना फिर छोड़
दिया है।

11हमारे परमेश्वर, तूने अपने सेवकों अर्थात् नबियों
का उपयोग किया और उन आदेशों को हमें दिया। तूने
कहा था: “जिस देश में तुम रहने जा रहे हो और जिसे
अपना बनाने जा रहे हो, वह भ्रष्ट देश है। यह उन बहुत
बुरे कामों से भ्रष्ट हुआ है जिन्हें वहाँ रहने वालों ने
किया है। उन लोगों ने इस देश में हर स्थान पर बहुत
अधिक बुरे काम किये हैं। उन्होंने इस देश को अपने
पापों से गंदा कर दिया है। 12अत: इस्राएल के लोगों,
अपने बच्चों को उनके बच्चों से विवाह मत करने दो।
उनके साथ सम्बन्ध न रखो! और उनकी वस्तुओ की
लालसा न करो! मेरे आदेशों का पालन करो जिससे
तुम शक्तिशाली होगे और इस देश की अच्छी चीजों का
भोग करोगे। तब तुम इस देश को अपना बनाये रखोगे
और अपने बच्चों को दोगे।”

13जो बुरी घटनायें हमारे साथ घटीं वे हमारी अपनी
गलतियों से घटीं। हम लोगों ने पाप के काम किये हैं
और हम लोग बहुत अपराधी हैं। किन्तु हमारे परमेश्वर,
तूने हमें उससे बहुत कम दण्ड दिया है जितना हमे
मिलना चाहिये। हम लोगों ने बड़े भयानक काम किये
हैं और हम लोगों को इससे अधिक दण्ड मिलना
चाहिये। ऐसा होते हुए भी तूने हमारे लोगों में से कुछ
को बन्धुवाई से मुक्त हो जाने दिया है। 14अत: हम
जानते हैं कि हमें तेरे आदेशों को तोड़ना नहीं
चाहिये। हमें उन लोगों के साथ विवाह नहीं करना
चाहिए। वे लोग बहुत बुरे काम करते हैं। परमेश्वर
यदि हम लोग उन बुरे लोगों के साथ विवाह करते रहे
तो हम जानते हैं कि तू हमें नष्ट कर देगा। तब
इस्राएल के लोगों में से कोई भी जीवित नहीं बच पा
एगा।

15यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, तू अच्छा है! और तू
अब भी हम में से कुछ को जीवित रहने देगा। हाँ, हम
अपराधी हैं! और अपने अपराध के कारण हम में
किसी को भी तेरे सामने खड़े होने नहीं दिया जाना
चाहिये।

लोग अपना पाप स्वीकार करते हैं

10 एज्रा प्रार्थना कर रहा था और पापों को स्वीकार
कर रहा था। वह परमेश्वर के मन्दिर के
सामने रो रहा था और झुक कर प्रणाम कर रहा था।
जिस समय एज्रा यह कर रहा था उस समय इस्राएल के
लोगों का एक बड़ा समूह स्त्री पुरुष और बच्चे उसके
चारों ओर इकट्ठे हो गए। वे लोग भी जोर–जोर से रो
रहे थे। 2तब यहीएल के पुत्र शकन्याह ने जो एलाम के
वंशजों में से था, एज्रा से बातें कीं। शकन्याह ने कहा,
"हम लोग अपने परमेश्वर के भक्त नहीं रहे। हम लोगों
ने अपने चारों ओर रहने वाले दूसरी जाति के लोगों के
साथ विवाह किया। किन्तु यद्यपि हम यह कर चुके हैं
तो भी इस्राएल के लिये आशा है। 3अब हम अपने
परमेश्वर के सामने उन सभी स्त्रियों और उनके बच्चों
को वापस भेजने की वाचा करें। हम लोग यह एज्रा की
सलाह मानने के लिए और उन लोगों की सलाह मानने
के लिये करेंगे जो परमेश्वर के नियमों का सम्मान
करते हैं। हम परमेश्वर के नियमों का पालन करेंगें।
4एज्रा खड़े होओ, यह तुम्हारा उत्तरदायित्व है, किन्तु हम
तुम्हारा समर्थन करेंगे। अत: साहसी बनो और इसे
करो।"

5अत: एज्रा उठ खड़ा हुआ। उसने प्रमुख याजक,
लेवीवंशियों और इस्राएल के सभी लोगों से जो कुछ
उसने कहा, उसे करने की, प्रतिज्ञा कराई। 6तब एज्रा
परमेश्वर के भवन के सामने से दूर हट गया। एज्रा
एल्याशीब के पुत्र योहानान के कमरे में गया। जब तक
एज्रा वहाँ रहा उसने भोजन नहीं किया और न ही पानी
पीया। उसने यह किया क्योंकि वह तब भी बहुत दु:खी
था। वह इस्राएल के उन लोगों के लिये दु:खी था जो
यरूशलेम को वापस आए थे। 7तब उसने एक सन्देश
यहूदा और यरूशलेम में हर एक स्थान पर भेजा।
सन्देश में बन्धुवाई से वापस लौटे सभी यहूदी लोगों को
यरूशलेम में एक साथ इकट्ठा होने को कहा। 8कोई
भी व्यक्ति जो तीन दिन के भीतर यरूशलेम नहीं आएगा,
उसे अपनी सारी धन सम्पत्ति दे देनी होगी। बड़े अधिकारियों
और अग्रजों (प्रमुखों) ने यह निर्णय लिया और वह
व्यक्ति उस व्यक्ति समूह का सदस्य नहीं रह जायेगा
जिनके मध्य वह रहता होगा।

9अत: तीन दिन के भीतर यहूदा और बिन्यामीन के
परिवार के सभी पुरूष यरूशलेम में इकट्ठे हुए और
नवें महीने के बीसवें दिन सभी लोग मन्दिर के आँगन
में आ गये। वे सभी इस सभा के विचारणीय विषय के
कारण तथा भारी वर्षा से बहुत परेशान थे। 10तब
याजक एज्रा खड़ा हुआ और उसने उन लोगों से कहा,
"तुम लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासी नहीं रहे। तुमने
विदेशी स्त्रियों के साथ विवाह किया है। तुमने वैसा
करके इस्राएल को और अधिक अपराधी बनाया है।
11अब तुम लोगों को यहोवा के सामने स्वीकार करना
होगा कि तुमने पाप किया है। यहोवा तुम लोगों के
पूर्वजों का परमेश्वर है। तुम्हें यहोवा के आदेश का
पालन करना चाहिए। अपने चारों ओर रहने वाले लोगों
तथा अपनी विदेशी पत्नियों से अपने को अलग करो।"

12तब पूरे समूह ने जो एक साथ इकट्ठा था, एज्रा
को उत्तर दिया। उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा: "एज्रा
तुम बिल्कुल ठीक कहते हो! हमें वह करना चाहिये
जो तुम कहते हो। 13किन्तु यहाँ बहुत से लोग हैं और
यह वर्षा का समय है सो हम लोग बाहर खड़े नहीं रह
सकते। यह समस्या एक या दो दिन में हल नहीं होगी
क्योंकि हम लोगों ने बुरी तरह पाप किये हैं। 14पूरे समूह
के सभा की ओर से हमारे प्रमुखों को निर्णय करने दो।
तब निश्चित समय पर हमारे नगरों का हर एक व्यक्ति
जिसने किसी विदेशी स्त्री से विवाह किया है, यरूशलेम
आए। उन्हें अपने अग्रजों (प्रमुखों) और नगरों के
न्यायाधीशों के साथ यहाँ आने दिया जाये। तब हमारा
परमेश्वर हम पर क्रोधित होना छोड़ देगा।"

15केवल थोड़े से व्यक्ति इस योजना के विरूद्ध थे। ये
व्यक्ति थे असाहेल का पुत्र योनातान और तिकवा का
पुत्र यहजयाह थे। लेवीवंशी मशुल्लाम और शब्बतै भी
इस योजना के विरूद्ध थे।

16अत: इस्राएल के वे लोग, जो यरूशलेम में वापस
आए थे, उस योजना को स्वीकार करने को सहमत हो
गए। याजक एज्रा ने परिवार के प्रमुख पुरुषों को चुना।
उसने हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति को चुना।
हर एक व्यक्ति नाम लेकर चुना गया। दसवें महीने के
प्रथम दिन जो लोग चुने गए थे हर एक मामले की जाँच
के लिये बैठे। 17पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने
उन सभी व्यक्तियों पर विचार करना पूरा कर लिया
जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था।

विदेशी स्त्रियों से विवाह करने वालों की सूची

18याजकों के वंशजों में ये नाम हैं जिन्होंने विदेशी
स्त्रियों से विवाह किया: योसादाक के पुत्र येशू के वंशजों,
और येशू के भाईयों में से ये व्यक्ति : मासेयाह, एलीआज़र,
यारीब और गदल्याह। 19इन सभी ने अपनी–अपनी
पत्नियों से सम्बन्ध–विच्छेद करना स्वीकार किया और
तब हर एक ने अपने रेवड़ से एक–एक मेढ़ा अपराध
भेंट के रूप में चढ़ाया। उन्होंने ऐसे अपने–अपने अपराधों
के कारण किया।

20इम्मेर के वंशजों में से ये व्यक्ति: हनानी और
जबद्याह।

21हारीम के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: मासेयाह,
एलीयाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

22पशहूर के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: एल्योएनै,
मासेयाह, इशमाएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

23लेवीवंशियों में से इन व्यक्तियों ने विदेशी स्त्रियों
से विवाह किया: योजाबाद, शिमी, केलायाह (इसे
कलीता भी कहा जाता है)। पतह्याह, यहूदा और
एलीआज़र।

24गायकों में केवल यह व्यक्ति है, जिसने विदेशी स्त्री
से विवाह किया:

एल्याशीब द्वारपालों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी
स्त्रियों से विवाह किया: शल्लूम, तेलेम और ऊरी।

25इस्राएल के लोगों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी
स्त्रियों से विवाह किया:

परोश के वंशजों से ये व्यक्ति: रम्याह, यिज्जियाह,
मल्कियाह, मियामीन, एलीआज़र, मल्कियाह और
बनायाह।

26एलाम के वंशजों में से ये व्यक्ति : मत्तन्याह, जकर्याह,
यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलियाह।

27जत्तू के वंशजों में से ये व्यक्ति एल्योएनै, एल्याशीब,
मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीज़ा।

28बेबै के वंशजों में से ये व्यक्ति: यहोहानान, हनन्याह,
जब्बै, और अतलै।

29बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मशुल्लाम, मल्लूक,
अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत।

30पहतमोआब के वंशजों में से ये व्यक्ति: अदना,
कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई
और मनश्शे। **31**हारीम के वंशजो में से ये व्यक्ति:
एलिआज़र, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन,
32बिन्यामीन, मल्लूक और शमर्याह।

33हाशूम के वंशजों में से ये व्यक्ति: मत्तनै, मत्तत्ता,
जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी।

34बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मादै, अम्राम,
ऊएल; **35**बनायाह, बेदयाह, कलूही; **36**बन्याह, मरेमोत,
एल्याशीब; **37**मत्तन्याह, मत्तनै, यासू;

38बिन्नूई के वंशजों में से ये व्यक्ति: शिमी **39**शेलेम्याह,
नातान, अदायाह; **40**मक्नदबै, शाशै, शारै; **41**अजरेल,
शेलेम्याह, शेमर्याह; **42**शल्लूम, अमर्याह, और योसेफ।

43नबो के वंशजों में से ये व्यक्ति : यीएल, मत्तित्याह,
जाबाद, जबीना, यद्दो, योएल और बनायाह।

44इन सभी लोगों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था
और इनमें से कुछ के इन पत्नियों से बच्चे भी थे।